



SHRI YESHE DORJEE THONGCHI

Shri Yeshe Dorjee Thongchi is the Founder President of the Arunachal Pradesh Literary Society which is engaged in a movement to spread the importance of literature amongst the people of Arunachal as school education in the State was started only after India gained independence. The Arunachal Pradesh Literary Society has started motivating young writers to start writing with moto 'Start Writing and Keep Writing' and now the state could produce number of talented writers who had won number of national awards including Sahitya Akademi Award within last few years.

2. Born on 13rd June, 1952, at Jigaon Village of Kameng District, Arunachal Pradesh to Late Phunchu Thongchi and Late Rinchin Chojom Thongchi in Sherdukpen tribe, Shri Thongchi did his B.A from Cotton College Guwahati and M.A from Guwahati University in 1976. Thereafter he entered in Arunachal Pradesh Civil Service and later inducted to Indian Administrative Service. He served as Deputy Commissioner for record twelve and half years, second longest term in whole India with postings to five Districts that include Tawang, Lower Subansiri, Lohit, East Kameng and insurgency infested district of Changlang. He held many important portfolios in the government of Arunachal Pradesh. After retirement, Shri Thongchi again served as State Chief Information Commissioner of Arunachal Pradesh.

3. Shri Thongchi is also associated with many socio-cultural and Literary organizations of the state and at the national level. He was president of Indigenous Faith and Cultural Society of Arunachal Pradesh which is an apex organization engaged in preservation and promotion of the indigenous faiths of Arunachal Pradesh like Donyi-Poloism, Rangfraistn, Amit Mataism and Buddhism against the backdrop of onslaught by align religion and culture.

4. Shri Thongchi is author of 8 novels, 4 short story collections, one folk tale collection, one autobiography and translated 3 books to Assamese from English, Hindi and Sanskrit. He has edited several journals and Souvenirs and written columns in News Papers. Three of his novels have been adapted to National Award Winning Films and his Short stories are adapted to TV Serials and Award Winning Dramas. His writings are included as text book by several universities and by School Boards. His books have been translated to several languages.

5. Shri Thongchi is recipient of many Literary Awards and awards for working towards national integrity through his writings. In 2005, he also received prestigious Sahitya Akademi Award for his novel 'Maun Outh Mukhar Hriday', in the same Year he received Bhasa Bharati Award from the National Institute of Indian Languages (NIIL) Mysore, thrice Axom Sahitya Sabha Award including the Kalaguru Bishnu Rabha Award, the highest Award of the Sabha. He received Assam-Arunachal Dr. Bhupen Hazarika Integrity Award from Dr, Bhupen Hazarika Trust, Guwahati in 2017, Phulchand Kahndewal Integrity Award of Golaghat Sahitya Sabha in 1999 and Bodosa Integrity Award of All Moran Students Union, Rangbang Terang Samanyay Award, Sinthur, Karbi Anglong, all for bringing national integrity through his writings. His other literary award includes Assam Valley Literary Award regarded as highest literary award of North East Region from Megor Tea and Educational Trust, Kolkata/Guwahati, Dr. Maidul Islam Bora Literary Award, Jatiya Vidyalaya Literary Award, Dr. Lakhmi Nath Bezbaruah Literary Award, Sadin-Pratidin Gosthi special achievement Award (Literature and Journalism) among others.





श्री येसे दरजे थोंगछी

श्री येसे दरजे थोंगछी अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष हैं। यह सोसायटी अरुणाचल प्रदेश के लोगों के बीच साहित्य के महत्व के प्रचार–प्रसार के अभियान में लगी हुई है। इस राज्य में स्कूली शिक्षा भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही शुरू हुई थी। अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसायटी ने युवा लेखकों को इस सूत्र वाक्य, 'लिखो और लिखते रहो' द्वारा प्रेरित किया है और अब राज्य में अनेक प्रतिभाशाली लेखक हैं, जिन्होंने कुछ वर्षों के दौरान साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।

2. 13 जून, 1952 को, अरुणाचल प्रदेश के कामेंग जिले के जिगांव गाँव में शेरडुकपेन जनजाति में स्वर्गीय फुंचु थोंगछी और स्वर्गीय रिनचिन शोजोम थोंगछी के घर जन्मे, श्री थोंगछी ने 1976 में कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी से बीए किया और गुवाहाटी विश्वविद्यालय से एमए किया। इसके बाद उन्होंने अरुणाचल प्रदेश राज्य सिविल सेवा में प्रवेश किया और फिर भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए। उन्होंने रिकॉर्ड साढ़े बारह वर्ष तक डिप्टी कमिश्नर के रूप में कार्य किया। यह पूरे भारत में दूसरा सबसे लंबा कार्यकाल था और इस दौरान उनकी नियुक्ति पांच जिलों तवांग, लोअर सुबानसिरी, लोहित, पूर्वी कामेंग और उग्रवाद प्रभावित चंगलांग में की गई थी। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश सरकार में कई महत्वपूर्ण विभागों को संभाला। सेवानिवृत्ति के बाद, श्री थोंगछी ने फिर से अरुणाचल प्रदेश के राज्य मुख्य सूचना आयुक्त के रूप में कार्य किया।

3. श्री थोंगछी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक और साहित्यिक संगठनों से भी जुड़े हुए हैं। वह इंडिजिनस फेथ एंड कल्चरल सोसायटी ऑफ अरुणाचल प्रदेश के अध्यक्ष थे, जो बाहरी धर्म और संस्कृति के हमले की पृष्ठभूमि में, अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय धर्मों डोन्यी–पोलोइज्म, रंगफ्रिस्टन, अमित मातावाद और बौद्ध धर्म के संरक्षण और संवर्धन के कार्य में लगा हुआ एक शीर्ष संगठन है।

4. श्री थोंगछी ने 8 उपन्यास, 4 लघु कहानी संग्रह, एक लोक कथा संग्रह, एक आत्मकथा लिखी है और 3 असमिया पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत में किया है। उन्होंने कई जर्नल और स्मारिकाओं का संपादन किया है और समाचार पत्रों में स्तंभ लिखे हैं। उनके तीन उपन्यासों का रूपांतरण राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों के लिए किया गया है और उनकी लघु कहानियों पर टीवी धारावाहिक और पुरस्कार विजेता नाटक तैयार किए गए हैं। कई विश्वविद्यालयों और स्कूल बोर्डों द्वारा उनकी कृतियों को पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल किया गया है। उनकी पुस्तकों का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

5. श्री थोंगछी को अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करने के लिए कई साहित्यिक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। 2005 में, उन्हें अपने उपन्यास ''मौन आउथ मुखर ह्रदय'' के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार और उसी वर्ष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेस, मैसूर का भाषा भारती, कलागुरु बिष्णु राभा पुरस्कार सहित तीन बार सर्वोच्च एक्सोम साहित्य सभा पुरस्कार प्राप्त हुए। अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए, उन्होंने 2017 में डॉ. भूपेन हजारिका ट्रस्ट, गुवाहाटी से असम–अरुणाचल डॉ. भूपेन हजारिका इंटिग्रिटी अवार्ड, गुवाहाटी, फूलचंद खंडेवाल एकता अवार्ड और 1999 में ऑल मोरन स्टूडेंट्स यूनियन, रंगबंग टेरंग समन्याय अवार्ड, सिन्थुर, कार्बी अंगलोंग के बोदोसा एकता पुरस्कार प्राप्त किए। उनके अन्य साहित्यिक पुरस्कारों में पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार माना जाने वाला मेगोर टी एंड एजुकेशनल ट्रस्ट, कोलकाताध्गुवाहाटी द्वारा प्रदान किया गया असम वैली लिटरेरी अवार्ड, डॉ. मैदुल इस्लाम बोरा लिटरेरी अवार्ड, जातीय विद्यालय लिटरेरी अवार्ड, डॉ. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ लिटरेरी अवार्ड, सदिन–प्रतिदिन गोष्ठी विशेष उपलब्धि पुरस्कार (साहित्य और पत्रकारिता) शामिल हैं।